नव भारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

पृथ्वी दिवस : संकल्प नहीं, निर्णायक कार्रवाई जरूरी

बुधवार को विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया. 56 वें पृथ्वी दिवस पर सवाल सीधा है कि क्या हम सच में अपनी धरती को बचाने के लिए तैयार हैं, या फिर यह दिन भी सोशल मीडिया पोस्ट और प्रतीकात्मक वृक्षारोपण तक सीमित रह जाएगा ?

वास्तविकता यह है कि हमने विकास के नाम पर प्रकृति के साथ संतुलन नहीं, बल्कि संघर्ष का रास्ता चुना है. शहरीकरण की अंधी दौड़, जंगलों की अंधाधुंध कटाई और प्राकृतिक संसाधनों का बेलगाम दोहन आज पर्यावरण असंतुलन की सबसे बड़ी वजह बन चुके हैं. जैव विविधता का तेजी से ह्रास हो रहा है. जिन वन्यजीवों के साथ यह पृथ्वी साझा थी, उनके आवास नष्ट हो रहे हैं और अनेक प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर पहुंच चुकी हैं. यह केवल पर्यावरण का संकट नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व पर मंडराता खतरा है.

प्रदूषण की स्थिति और भी चिंताजनक है. हवा जहरीली हो चुकी है, नदियाँ विषाक्त हो रही हैं और मिट्टी अपनी उर्वरता खोती जा रही है. इसका सीधा असर हमारे स्वास्थ्य, कृषि और अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है. सवाल यह है कि क्या हम इस संकट को केवल आंकड़ों में देखकर संतुष्ट हो जाएंगे, या इसके समाधान के लिए ठोस कदम उठाएंगे ?

ग्लोबल वार्मिंग अब किसी भविष्यवाणी का विषय नहीं, बल्कि वर्तमान का कठोर सच है. पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है और इसके परिणाम हमारे सामने हैं,ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है और मौसम का मिजाज अनिश्चित होता जा रहा है. कहीं भीषण बाढ़ है तो कहीं लंबा सूखा, कहीं चक्रवातों की तीव्रता बढ़ रही है. वैज्ञानिक स्पष्ट चेतावनी दे चुके हैं कि यदि तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस के भीतर नहीं रोका गया, तो परिणाम विनाशकारी होंगे. इसके बावजूद वैश्विक और स्थानीय स्तर पर प्रयास अपेक्षित गति से आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं.

ऐसे में यह समझना जरूरी है कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारों या अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की जिम्मेदारी नहीं है. यह हर नागरिक का कर्तव्य है. बड़े-बड़े भाषणों और घोषणाओं से अधिक प्रभाव छोटे-छोटे व्यवहारिक बदलावों से आता है. सिंगल-यूज प्लास्टिक से दूरी, ऊर्जा की बचत, जल संरक्षण, और नवीकरणीय ऊर्जा के स्त्रोतों को अपनाना,ये कदम मामूली लग सकते हैं, लेकिन इनका सामूहिक प्रभाव बहुत बड़ा हो सकता है. वृक्षारोपण भी तभी सार्थक है, जब उसे अभियान नहीं, जिम्मेदारी के रूप में लिया जाए. पेड़ लगाना आसान है, लेकिन उसे बचाकर बड़ा करना ही असली पर्यावरण सेवा है. इसी तरह 'सतत जीवनशैली' को अपनाना समय की मांग है, जहां उपभोग सीमित हो और अपशिष्ट न्यूनतम.

दरअसल, पृथ्वी के पास हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन हमारे लालच के लिए नहीं. यदि हमने अब भी अपनी जीवनशैली और विकास मॉडल पर पुनर्विचार नहीं किया, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक असुरक्षित और असंतुलित दुनिया छोड़ जाएंगे.

विश्व पृथ्वी दिवस हमें यही संदेश देता है कि अब प्रतीकात्मकता नहीं, बल्कि निर्णायक कार्रवाई का समय है. हमें उपभोक्ता नहीं, संरक्षक बनना होगा. क्योंकि अंततः यह सच अटल है, पृथ्वी बचेगी, तभी मानव सभ्यता भी बचेगी.

ट्रेनों को गति | रेल पटरियों का आधुनिकीकरण

अश्विनी वैष्णव

भारत भर में प्रतिदिन 25,000 से अधिक ट्रेनें चलती हैं. ये ट्रेनें प्रतिदिन 2 करोड़ से अधिक यात्रियों को ले जाती हैं और 1,37,000 किलोमीटर से अधिक लंबी पटरियों के जाल पर कोयला, लौह अयस्क, अनाज, इस्पात, सीमेंट और अन्य वस्तुओं की भारी मात्रा में ढुलाई करती हैं. पटरी ही वह आधार है जिस पर यह पूरी व्यवस्था टिकी है. जब पटरी अच्छी स्थिति में होती है, तो ट्रेनें अधिक गति से सुरक्षित रूप से चलती हैं. खराब पटरी के कारण गति सीमा, देरी और सुरक्षा संबंधी जोखिम जैसी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं. टूटी हुई पटरी, ढीला जोड़ या अवरुद्ध गिट्टी, ये सभी चीजें ट्रेन की गति को प्रभावित कर सकती हैं.

> लगभग 17,500 किलोमीटर लंबी सुरक्षा बाड़ लगाई गई है, खासकर उन जगहों पर जहां ट्रेनें 110 किमी प्रति घंटे से अधिक की गति से चलती हैं, जिससे लोगों और मवेशियों द्वारा अतिक्रमण को रोकने में मदद मिलती है. विभिन्न चौराहों और क्रॉसिंग पर 36,000 मोटे-जाल वाले स्विच और 7,500 वेल्ड करने योग्य सीएमएस क्रॉसिंग लगाए गए हैं – ये अधिक समय तक चलते हैं और ट्रेनों की सुगम आवाजाही सुनिश्चित करते हैं. 2019 में अपनाई गई चौड़ी और भारी स्लीपरें स्थिरता में सुधार करती हैं, विशेष रूप से गर्मी के मौसम में. गर्डर पुलों पर एच-बीम स्लीपर और यार्डों से गुजरने वाली लंबी वेल्डेड रेल पटरियों ने नेटवर्क को और मजबूत बनाया है.

पटरियों के महत्व को ध्यान में रखते हुए, भारतीय रेलवे ने एक दशक पहले एक व्यापक आधुनिकीकरण कार्यक्रम शुरू किया था. इस कार्य में आधुनिक मशीनों का उपयोग करके पटरियों का नवीनीकरण, उन्नत विधियों द्वारा परीक्षण और निरीक्षण, मशीनीकृत रखरखाव, सुरक्षा बाड़ लगाना आदि शामिल थे. इन सभी प्रयासों से रेलवे नेटवर्क की स्थिति में स्पष्ट रूप से सुधार हुआ है.2014 से अब तक लगभग 55,000 किलोमीटर पटरियों का नवीनीकरण किया जा चुका है, जिससे सुरक्षा और यात्रा की गुणवत्ता में सुधार हुआ है और बार-बार मरम्मत की आवश्यकता कम हुई है. लगभग 44,000 किलोमीटर लंबी रेल पटरियां (प्रत्येक 260 मीटर) बिछाई गई हैं. लंबी पटरियों का मतलब है कम जोड़, जिससे ट्रेनों का सुचारू और सुरक्षित संचालन सुनिश्चित होता है. 80,000 किलोमीटर से अधिक मजबूत 60 किलोग्राम की पटरियां अब उपयोग में हैं, जो भारी भार और उच्च गति को सहन कर सकती हैं.मजबूत रेल बिछाना महत्वपूर्ण है, लेकिन समस्याओं का जल्द पता लगाना भी उतना ही जरूरी है.

लगभग 36.2 लाख किलोमीटर ट्रैक और 2.25 करोड़ वेल्ड पर अल्ट्रासोनिक फ्लॉ डिटेक्शन परीक्षण किया गया है, जिससे रेल के अंदर छिपी दरारों का पता लगाया जा सकता है जो बाहर से दिखाई नहीं देतीं. इसके परिणामस्वरूप, रेल और वेल्ड की विफलताएं लगभग 90त्न तक कम हो गई हैं, यानी समस्या होने के बाद उसे ठीक करने के बजाय उसे पहले से ही रोकने की दिशा में बदलाव आया है. अब उपयोग में लाई जा रही अन्य विधियों में फ्लैश-बट वेल्ड के लिए फेज़्ड-एरे परीक्षण, नए वेल्ड के लिए मैग्नेटिक-पार्टिकल निरीक्षण और जीपीएस-सक्षम ऑसिलेशन मॉनिटरिंग सिस्टम (ओएमएस) शामिल हैं जो ट्रैक की गुणवत्ता को मापते हैं और ट्रैक पर खुरदुरे धब्बों की सटीक स्थिति का पता लगाते हैं. ट्रैक मशीनों का बेड़ा 2014 में 748 से बढ़कर 2026 में 1,785 हो गया है. ये मशीनें टैंपिंग, गिट्टी की सफाई और रेल ग्राइंडिंग का काम मैन्युअल काम की तुलना में बेहतर, तेज और अधिक समान रूप से करती हैं.पटरियों के नीचे बिछाई गई बजरी की परत (जो जल निकासी प्रदान करती है, कंपन को अवशोषित करती है और पटरी को स्थिर रखती है) की गहन छनाई में मशीनों ने उल्लेखनीय अंतर पैदा किया है. समय के साथ, ट्रेनों के निरंतर भार और कंपन के कारण बजरी चूर्ण बन जाती है, जिससे पटरी अवरुद्ध हो जाती है और उसकी कार्यक्षमता कम हो जाती है. छनाई से पटरी की सतह को उसकी उचित स्थिति में बहाल किया जा सकता है. यह कार्य 1 लाख किलोमीटर से अधिक पटरियों पर किया गया है, जिसमें से अधिकांश कार्य मशीनों द्वारा किया गया है.

सतह की खामियों को दूर करने और इस प्रकार यात्रा की गुणवत्ता और सुरक्षा में सुधार करने के लिए, 1 लाख किलोमीटर से अधिक पटरियों की पिसाई की गई है.ट्रेन यातायात में प्रति वर्ष वृद्धि के साथ, ट्रेनों के बीच रखरखाव का समय कम होता जा रहा है. मशीनें सेवाओं को बाधित किए बिना कम समय में अधिक कार्य करने में मदद करती हैं. लेकिन सुरक्षा इस बात पर भी निर्भर करती है कि ट्रेनें चौराहों और क्रॉसिंग से कैसे गुजरती हैं. भारतीय रेलवे ने पटरी नवीनीकरण के साथ-साथ कई सहायक उपाय भी किए हैं.

(लेखक केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री हैं.)

ग्वालियर चंबल डायरी

प्रीतम पर एक्शन से पहले लोधी वोट बैंक की ताकत पर मंथन

हरीश दुबे

पिछोर सीट पर तीस साल से लगातार हार का सामना कर रही भाजपा को यहां 21 हजार वोटों के बड़े अंतर से जीत दिलाने वाले विधायक प्रीतम लोधी अब अपनी ही पार्टी के लिए मुसीबत बन गए हैं. यहां तक तो ठीक था कि वे बाहुबली छवि के विधायक हैं लेकिन अपने पुत्र की कार से हुए एक्सीडेंट के मामले में उन्होंने जिस तरह सीनियर पुलिस अफसरों से पंगा मोल ले लिया और फ्रीस्टाइल में एक सीनियर पुलिस ऑफिसर को धमकीनुमा चुनौतियां दीं, उससे वे लोग भी हैरान परेशान हैं जो प्रीतम को हर विवाद के बाद सुरक्षित बाहर निकाल लाते हैं.

पता तो यही चला है कि प्रीतम द्वारा सरकारी तंत्र के खिलाफ इस्तेमाल की गई भाषा से पार्टी आलाकमान नाराज है और प्रदेश नेतृत्व से रिपोर्ट तलब की है. सच्चाई की तह तक पहुंचने के लिए अलग अलग सोर्सेज से जानकारियां जुटाकर सूबाई सदर हेमंत खंडेलवाल ने केंद्र को रिपोर्ट भेज भी दी है. प्रदेश नेतृत्व आग में घी डालने या हवन में हाथ जलाने जैसी स्थितियों से बचने के लिए अपने स्तर पर कोई एक्शन लेने के बजाए दिल्ली से आने वाले दिशा निर्देश का इंतजार कर रहा है. कार्रवाई में अलाली की एक वजह इसी अट्ठाइस को आयोजित हो रहा लोधी समाज का सम्मेलन भी है. किसी भी कार्रवाई को यह सम्मेलन होने तक टाला जा सकता है. अंदरखाने इस बात की भी सुगबुगाहट है कि मिलट्री की महिला अधिकारी पर टिप्पणी करने के बाद विवाद में फंसे मिनिस्टर कुंवर विजय शाह की तर्ज पर प्रीतम लोधी को बचाने की कवायद भी चल रही है. बीते रोज वरिष्ठ मंत्री प्रहलाद पटेल की हेमंत खंडेलवाल से हुई मुलाकात के बाद यह अटकलें ज्यादा तेज हो गईं. खबर यह है कि पटेल ने प्रदेश नेतृत्व के समक्ष प्रीतम लोधी का पक्ष रखा है. प्रीतम के खिलाफ किसी बड़ी अनुशासनात्मक कार्रवाई में विलंब का एक बड़ा फैक्टर पूर्व सीएम उमा भारती से उनकी नजदीकी भी है. अब जबकि विधानसभा चुनाव में ढाई साल और स्थानीय निकाय चुनाव में बमुश्किल एक साल बाकी है, सत्तारूढ़ दल लोधी वोटबैंक को नाराज नहीं करना चाहता. लिहाजा कोई ऐसा रास्ता तलाशा जा रहा है कि कार्रवाई की औपचारिकता पूरी हो जाए और लोधी समाज नाराज भी न हो. वैसे ब्राह्मण समाज पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने पर प्रीतम छह माह के लिए पार्टी से निष्कासित रह चुके हैं तब उन्होंने ओबीसी महासभा के साथ शक्ति प्रदर्शन किया था. प्रीतम के खाते में एकमात्र बड़ी उपलब्धि पार्टी के लिए पिछले तीन दशकों से हाई रिस्क जोन मानी जाने वाली पिछोर सीट पर कमल खिलाना और कांग्रेस के कद्दावर नेता कक्काजू के अभेद्य दुर्ग को ढहाना है, देखना है कि ताजा विवाद में उनका यह प्रोफाइल कितना काम आता है.

अब कांग्रेस किस मुंह से करे घेराबंदी

कांग्रेस एक ओर भाजपा विधायक प्रीतम लोधी के बयानों को लेकर हमलावर है वहीं कांग्रेस के ही कई बार पार्षद रह चुके और मौजूदा वक्त मेयर-इन-काउंसिल की जिम्मेदारी संभाल रहे विनोद यादव के बिगड़े बोल पार्टी और कांग्रेस शासित निगम परिषद के लिए मुसीबत बन गए हैं. हालांकि पार्षद महोदय ने अपना बेलगाम गुस्सा शहर में व्याप्त पानी संकट को लेकर जाहिर किया लेकिन जिस धमकीनुमा भाषा का उन्होंने इस्तेमाल किया, वह उस तहजीब और नफासत के ठीक उलट है, जिसका कांग्रेस दावा करती रही है. एमआईसी सदस्य के शब्द हैं – मेरे पास तेल पिला हुआ लट्ठ रखा है, जो उन अधिकारी ओर कर्मचारियों के लिए है जो पानी नहीं दे रहे हैं. इनको टंकी पर लेकर जाकर लगे पड़ेगें, जूते चप्पलों की माला पहनवाएंगे. इस बयान के बाद पानी सप्लाई की जिम्मेदारी संभालने वाले निगम के पीएचई महकमे के इंजीनियर नाराज हैं और कांग्रेस की तरफ से भी उन पर बयान वापस लेने का दवाब पड़ रहा है.

अकासा का श्रेय लेने की होड़

ग्वालियर से दिल्ली और बेंगलुरु के लिए अकासा एयरलाइंस की नई विमानसेवा मंजूर होने के साथ ही ग्वालियर के छत्रपों में इसका श्रेय लेने की होड़ शुरू हो गई है. सिंधिया और सांसद भारतसिंह दोनों ने ही इसका श्रेय अपने अपने खाते में दर्ज कराया है. पार्टी की गुटबाजी भी सामने आई. ऊर्जा मंत्री ने अपने बयान में सीएम, नागरिक उड्डयन मंत्री और सिंधिया के प्रयासों का उल्लेख तो किया लेकिन उनके बयान में भारतसिंह का नाम नहीं था. उधर भारतसिंह का कहना है कि वे सांसद होने के नाते एयरपोर्ट अथॉरिटी के चेयरमैन हैं और यह विमानसेवा दिलाने अरसे से कोशिश कर रहे थे.

क्या लोकसभा में 850 सदस्य चाहिए?

भारत की आबादी वर्ष 2060 की शुरुआत तक 160 करोड़ हो जाने की संभावना व्यक्त की जा रही है. इस दौरान लोकसभा की सीटें वर्तमान 543 से बढ़ाकर 850 करने के प्रस्ताव पर चर्चा होने लगी है. क्या आबादी का प्रतिनिधित्व सांसदों की तादाद बढ़ाने से हो जाएगा? कुछ चुनाव क्षेत्रों की आबादी ज्यादा है तो कुछ की कम. इसलिए चुनाव क्षेत्रों की पुनर्रचना या डिलिमिटेशन की बात हो रही है. अमेरिका में 1929 से हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव या प्रतिनिधि सदन के सदस्यों की संख्या 435 चली आ रही है. जबकि इन 97 वर्षों में उस देश की आबादी 3 गुना बढ़ गई है. सांसदों की बजाय विधायकों की तादाद बढ़ाना उचित रहेगा ताकि ज्यादा अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व हो सके. यह तर्क दिया जाता है कि सांसदों की संख्या बढ़ाने से प्रतिनिधित्व व्यापक हो सकेगा. यदि देखा जाए तो कितने ही सांसद ऐसे हैं जो अपने 5 वर्ष के कार्यकाल में मुंह नहीं खोलते. पार्टी उनका सिर्फ किसी बिल पर वोटिंग के दौरान अपना संख्याबल दिखाने के लिए इस्तेमाल करती है. वह अपने क्षेत्र की समस्याएं नहीं उठा पाते क्योंकि सदन की बहस में सिर्फ पार्टी के वरिष्ठ नेता भाग लेते हैं. बड़ी मुश्किल से कोई प्राइवेट मेंबर्स बिल चर्चा के लिए आता है. लोकसभा की सदस्य संख्या लगभग दोगुनी करने से सांसदों के वेतन-भत्ते-पेंशन का भार सरकारी खजाने पर बहुत बढ़ जाएगा. दिल्ली में इनके लिए अतिरिक्त बंगलों की व्यवस्था करनी होगी. यह कहना बेमतलब है कि बड़ा चुनाव क्षेत्र रहने से सांसद को जनसंपर्क करना मुश्किल हो जाता है. 25-30 साल पहले तक ऐसी दिक्कत रही होगी लेकिन आज तो सड़कें बन गई हैं, रेलमार्ग व हेलीकाप्टर सेवा का विस्तार हुआ है. स्मार्टफोन तथा इंटरनेट संपर्क उपलब्ध है. इसलिए ग्रामीण क्षेत्र व अर्धशहरी इलाके में भी जनसंपर्क आसान हो गया है.

ग्रामपंचायतों, जिला परिषद तथा विधानसभा के सदस्यों की संख्या बढ़ाने से काम चल सकता है जो सीधे जनता से जुड़े रहते हैं. सांसदों की संख्या यथावत रहे तो भी कोई हर्ज नहीं है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मोदी ने दिया विपक्ष को शाप नारी शक्ति नहीं करेगी माफ

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, प्राचीन काल में तपस्वी ऋषि-मुनि क्रोधित होने पर शाप दे दिया करते थे. अब केदारनाथ की गुफा और कन्याकुमारी में ध्यान लगाकर तपस्या कर चुके प्रधानमंत्री मोदी ने भी पापियों को पहचानकर उन्हें शाप दिया है. उन्होंने कहा कि जिन विपक्षी दलों ने नारी शक्ति वंदन बिल को संसद में गिराया है उन्हें उनके इस महापाप के लिए महिलाएं कभी माफ नहीं करेंगी.'

हमने कहा, 'इस भयानक शाप से तृणमूल कांग्रेस तिनके के समान बिखर जाएगी. मोदी के सामने क्षमायाचना करते हुए ममता बनर्जी त्राहिमाम कहते हुए साष्टांग दंडवत करने लगेंगी. पौराणिक युग में जिसे शाप दिया जाता था, वह पत्ते की तरह कांपने लगता था. बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी ऋषि मुनियों के शाप से डरते थे. उनके दरबार में आते ही हाथ जोड़कर खड़े हो जाते थे और उनके धूल भरे चरणों को धोते थे.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, आप सतयुग, त्रेतायुग और द्वापर की बातें कर रहे हैं. कलियुग में किसी का दिया हुआ शाप असर नहीं करता. इसलिए विपक्ष और खास तौर पर ममता बनर्जी को डरने की जरूरत नहीं है.' हमने कहा, 'ममता तो पहले ही फीयरलेस हैं. वह मोदी, शाह और बीजेपी के बड़े नेताओं को बाहरी लोग कहती हैं. उनका सवाल है- मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है?'

हमने कहा, 'यदि पौराणिक काल की बात की जाए तो शाप देने के मामले में दुर्वासा नंबर वन थे. एक बार उन्होंने सुगंधित पुष्पों की माला देवराज इंद्र को दी. इंद्र ने माला स्वयं न पहनकर अपने ऐरावत हाथी को पहना दी. हाथी ने सूंड से माला उतारकर अपने पैरों से कुचल डाली. इस अपमान से क्रोधित होकर दुर्वासा ने इंद्र को शाप दे डाला. इसी तरह गौतम मुनि ने भी अपनी पत्नी अहिल्या का छल से विनयभंग करने पर इंद्र और उसके सहयोगी चंद्रमा को शाप दिया था. दुर्वासा का इतना दबदबा था कि उन्होंने श्रीकृष्ण व रुक्मिणी से अपना रथ खिंचवाया था और अपनी जूठी खिचड़ी श्रीकृष्ण के बदन पर चुपड़ दी थी. उर्वशी नामक अप्सरा का प्रणय निवेदन अर्जुन ने ठुकरा दिया था तो उर्वशी ने उन्हें 1 वर्ष के लिए पुरुषत्वहीन बृहन्नला बन जाने का शाप दिया था.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, राजनीति में मतलब पूरा नहीं होने पर नेता अपने विरोधियों को कोसा-सरापा करते हैं लेकिन किसी का कुछ भी नहीं बिगड़ता. इतना जरूर है कि किसी गरीब की बददुआ नहीं लेनी चाहिए क्योंकि संत कबीर ने कहा था- कबहूं न सताइए गरीब को, जाकी मोटी हाय, मुए चाम की आह से लोह भस्म हुई जाए. इसका अर्थ है- किसी गरीब को मत सताओ. लोहार की धौंकनी में मरे हुए पशु के चमड़े की हवा से आंच भड़कती है और लोहा भी भस्म हो जाता है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12237
- डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3		4	5	6
7			8	9			
10			11				
		12			13		
	14			15			
16				17			18
		19	20				
21						22	

बाएं से दाएं
1.टीन का चौखूंटा पीपा 4. सेना का वह खाद्य पदार्थ जो उसके साथ रहता है 7. मूल्य, कीमत, विजय प्राप्ति के चार उपायों में से एक 8. नदी-तालाब आदि में नाव पर घूमकर सैर करना 10. हंसी, दिल्लगी, एक रस 11. चिड़ियों का घोंसला 12. वर्तमान दिन, जो दिन बीत रहा है 13. व्यर्थ बोलना, बकवास करना 14. विक्षिप्तता, मूर्खता 16. तप्त, गर्मी पैदा करने वाला 17. सेना अथवा सिपाहियों का युद्ध नियमों का अभ्यास करना 19. पुरुष और स्त्री 21. रेखा-चित्र, पृथ्वी केकिसी भाग या खगोल का चित्र 22. जान, जीवन (सं.)

ऊपर से नीचे
1. बुरा भोजन, निकृष्ट एवं गंदी चीजें खाना (सं.) 2. नम्र, विनयी, सम्माननीय (सं.) 3. कुहरा, ओस (सं.) 4. सूर्य 5. सहायता करने वाला, सहकारी 6. गड्ढा, गुफा, विदारण, द्वार, भाव 9. एक सी वस्तुओं की माला 12. आमद, आना 13. श्रीकृष्ण 14. नदी या समुद्र का सामने वाला दूसरा तट 15. कच्चा न रह जाना, फल आदि का पुष्ट होकर खाने योग्य होना, फोड़े या घाव में मवाद पड़ना 16. प्रस्थान, जाना 18. आईना, आरसी 20. ध्वनि, गुंजार, शब्द, आवाज

Solution 12236

प्र	ति	छा	पि	त		ज	ल
ला	ल		ता	ड़		न	ह
प		म		प	रि	वा	र
	प	ल्ल	व	ना		सा	दा
उ	र		ज		अ		र
पा	पी		ह	रि	ज	न	
स	ड़	क		या	ग		नं
ना	क		न	ज	र	बं	द

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा, प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यो में सफलता मिलेगी. पद का लाभ प्राप्त होगा. व्यवसायिक मामलों में स्थिति सामान्य रहेगी. धार्मिक कार्यो में संलग्नता रहेगी. वर्ष के अन्त में शत्रु वर्ग से कष्ट होगा. मित्र के कारण कार्य में व्यवधान आ सकता है. व्यर्थ के वाद विवाद से दूर रहें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पद का लाभ प्राप्त होगा. सामाजिक कार्यो में सफलता मिलेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शत्रु वर्ग से कष्ट होगा, चिन्ता रहेगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को स्थिति में सुधार होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्य क्षेत्र में रूचि रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को सहयोग मिलेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को कार्यो में व्यवधान आ सकता है. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शालीनता से सफलता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वाभाव से शांत और गंभीर तथा महत्वाकांक्षी होगा, अपने कार्यो के प्रति सजग रहने वाला, ईमानदार एवं क्रोधी होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी, साहित्य के क्षेत्र में उन्नति करेगा, भाग्योदय जन्म स्थान से दूर होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

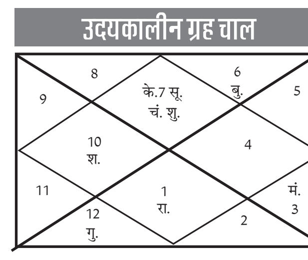

पंचांग

रा.मि. 03 संवत् 2083 वैशाख शुक्ल सप्तमीं गुरूवासरे रात 1/16, पुनर्वसु नक्षत्रे रात 1/17, सुकर्मा योगे दिन 10/30, गर करणे सू.उ. 5/36, सू.अ. 6/24, चन्द्रचार मिथुन रात 7/38 से कर्क, शु.रा. 3, 5, 6, 9, 10, 1 अ.रा. 4, 7, 8, 11, 12, 2 शुभांक- 5, 7, 1.

व्यापार भविष्य

वैशाख शुक्ल सप्तमीं को पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, स्टील, लोहा, धातु, गेहूँ, जौ, चना, मटर, के भाव में वृद्धि होगी, गुड़ खांड, उड़द, घी, तेल, सरसों, आदि के भाव में मंदी होगी, भाग्यांक 4065 है.

मेष- अनुभव की कमी आपको उलझा सकती है, नवीन योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, अतिथि आगमन होगा, यश प्राप्त होने का योग है.

वृषभ- नया कार्य शुरू करने से पहिले अच्छी तरह सोच समझ लें, बाद में परेशानी होगी, अधिकारियों की बातचीत में नरमी बरतें, संयम से काम करना लाभदायक रहेगा.

मिथुन- स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव बना रहेगा, परिचितों की मदद करके प्रसन्नता मिलेगी, वैभव विलासिता की वस्तुओं का संचय होगा.

कर्क- दौड़धूप के बावजूद बड़ी सफलता मिलना मुश्किल है, अनहोनी का भय रहेगा, निजी कार्यो में रूचि बढ़ेगी, पुरूषार्थ बना रहेगा.

सिंह- कामकाज में आ रही मुश्किलें दूर होंगी, भावनात्मक संबंधों में चल रहा गतिरोध दूर होगा, वैभव विलासिता की वस्तुओं में रूचि रहेगी, दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी.

कन्या- रूचि का काम मिलने से खुशी होगी, आय में बढ़ोत्तरी होगी, संतान पक्ष से सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा, जोखिम पूर्ण कार्यो से बचने का प्रयास करें.

तुला- दौड़धूप से नुकसान की भरपाई कर लेंगे, सुख सुविधा पर खर्च की संभावना है, किसी प्रिय व्यक्ति से विवाद या विश्वासघात हो सकता है.

वृश्चिक- तनाव की स्थिति में फैसला लेना बेकार होगा, समाज में मान सम्मान बढ़ेगा, पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी, दूसरों से सहयोग न मिलने से दुख रहेगा.

धनु- दुविधा की स्थिति आगे बढ़ने में बाधक हो सकती है, पारिवारिक यात्रा संभव है, वाहन जोखिम कार्यो से बचने का प्रयास करें.

मकर- कानूनी मामले हल होंगे, आपसी लोग जानबूझकर नुकसान कर सकते हैं, सावधानी रखें, भाग्यवर्धक प्रयासों में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें.

कुम्भ-विवादास्पद मामले आपसी बातचीत में सूलझ सकते हैं, शासन सत्ता से सहयोग मिलेगा, रूके कार्यो में गति आयेगी, पुरानी मित्रता उपयोगी रहेगी.

मीन- कार्यस्थल की समस्याओं का समाधान होगा, सहकर्मी नीचा दिखाने कि प्रयास कर सकते हैं, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी, मांगलिक कार्यो में खर्च होगा.

SUDOKU 7369

4			9		6	1		8
6	8							
	1	7	3	8		4		
3	4		6		7			9
5		1	8			2		7
2			5		1		8	4
		3		7	5	8	6	
							9	5
7		6	2		8			1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7368

2	9	8	3	5	6	1	7	4
4	5	3	2	1	7	9	8	6
7	1	6	4	8	9	2	5	3
8	2	5	6	9	1	3	4	7
3	6	4	7	2	5	8	1	9
1	7	9	8	3	4	5	6	2
5	4	1	9	7	2	6	3	8
6	3	2	1	4	8	7	9	5
9	8	7	5	6	3	4	2	1